(पृष्ठ 17 का शेष...डॉ. भारिल्ल का उद्‌बोधन)

इस महान संस्थान के प्रथम दीक्षान्त समारोह में डी.लिट् की मानद उपाधि से अलंकृत होकर मैं स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूँ। भारतीय संविधान के विशेषज्ञ महान न्यायाधिपति **व्यंकट चैलैया,** युवा उद्योगपति **नवीन जिन्दल** एवं **अजय गुप्ता (साउथ अफ्रीका)** के साथ इस सम्मान से सम्मानित होकर मेरा आनन्द द्विगुणित हो गया है।

मैं इस बात को बहुत अच्छी तरह जानता हूँ कि साहित्यकारों और समाजसेवकों का सम्मान एक व्यक्ति का नहीं; व्यक्तिविशेष का नहीं; अपितु सत्साहित्य और समाजसेवा का सम्मान है। इसप्रकार के प्रयासों से सत्साहित्य के निर्माण और सच्ची समाजसेवा को प्रोत्साहन मिलता है।

मैं तो उस कच्ची नहर के समान हूँ, जो जलाशय से प्राप्त जल से पहले तो अपनी प्यास बुझाती है, जब तृप्त हो जाती है तो उस जलप्रवाह को दूसरों की प्यास बुझाने के लिए आगे बढा देती है।

मैंने भी **पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी** से प्राप्त **भगवान महावीर** की वाणी से सबसे पहले अपनी प्यास बुझाई है, उसका भरपूर आनन्द लिया है; उसके बाद जन-जन की प्यास बुझाने के लिए व्यवस्थितरूप से आगे बढाने के प्रयास में स्वयं को समर्पित कर दिया है।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी के प्रमुख शिष्यों में एक नाम पण्डित कैलाशचन्दजी बुलन्दशहर वालों का भी आता है। अध्यात्म के रंग में रंगे हुए पण्डित कैलाशचन्दजी जीवन भर सारे देश में घूम-घूमकर अध्यात्म का प्रचार करते रहे हैं।

उनसे मेरा परिचय लगभग 50 वर्ष पुराना है। उनकी भावना थी कि एक ऐसा शिक्षण संस्थान बने, जहाँ लौकिक शिक्षा के साथ-साथ आध्यात्मिक शिक्षा का भी प्रबंध हो। मङ्गलायतन विश्वविद्यालय की स्थापना के रूप में उनका स्वप्न साकार हुआ है।

मैं इस बात को बहुत गहराई से अनुभव करता हूँ कि मेरा यह सम्मान उस वीतरागी तत्त्वज्ञान का सम्मान है, जो मुझे पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी से प्राप्त हुआ है और जिसे मैंने अनेकानेक ग्रंथों के निर्माण के माध्यम से, सत्साहित्य की सेवा के माध्यम से, अपने प्रवचनों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया है और भारतीय संस्कृति के संस्कारों से ओतप्रोत पाँच सौ से अधिक विद्वान् तैयार किये हैं, जो आज विश्व के कोने-कोने में भारतीय संस्कृति, अहिंसा और शाकाहार का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

यह सम्मान मेरा नहीं, गुरुवर श्री कानजीस्वामी का है और उसके बाद उन सब सहयोगियों का है, जो इस महान कार्य में मेरे कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग कर रहे हैं। जयजिनेन्द्र। ●

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 28 317 अंक : 5

अज्ञानी पाप धतूरा न बोय

फल चाखन की बार भरै दृग, मरिहै मूरख होय।
अज्ञानी पाप धतूरा न बोय।।टेक।।

किंचित् विषयनि के सुख कारण दुर्लभ देह न खोय।
ऐसा अवसर फिर न मिलेगा इस नींदड़ी न सोय।।1।।

इस विरियां में धर्मकल्पतरु सींचत स्याने लोय।
तू विष बोवन लागत तो सम और अभागा कोय।।2।।

जे जग में दु:खदायक वे रस इस ही के फल सोय।
यों मन भूधर जानि के भाई फिर क्यों भोंदू होय।।3।।

- कविवर पण्डित भूधरदासजी

छहढाला प्रवचन

मिथ्याचारित्र का स्वरूप

जो कुगुरु-कुदेव-कुधर्म सेव, पोषै चिर दर्शनमोह एव।
अन्तर रागादिक धरैं जेह, बाहर धन-अम्बरतैं सनेह।।९।।
धारैं कुलिंग लहि महत भाव, ते कुगुरु जन्मजल उपल नाव।
जो राग-द्वेष मलकरि मलीन वनिता-गदादिजुतचिह्नचीन।।१०।।
ते हैं कुदेव, तिनकी जु सेव शठ करत, न तिन भवभ्रमण छेव।
रागादि भावहिंसा समेत, दर्वित त्रस-थावर मरण खेत।।११।।
जे क्रिया तिन्हैं जानहु कुधर्म, तिन सरधै जीव लहै अशर्म।
याकूँ गृहीत मिथ्यात्व जान, अब सुन गृहीत जो है अज्ञान।।१२।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे...)

अहा, जैनधर्म का गुरुपद तो महान पवित्र परमेष्ठीपद है; जिनके अंतर में मिथ्यात्व तथा राग-द्वेष का परिग्रह नहीं है और बाहर में वस्त्र-धन आदि का परिग्रह नहीं है; वे शुद्ध रत्नत्रय में वर्तते हुए आत्मिक आनन्द का अनुभव करते हैं और मोक्ष को साधते हैं ह्न ऐसे पवित्र गुरुपद से विपरीत जिसके अन्तर में मिथ्यात्व-रागादि परिग्रह हैं और बाहर में भी उसी अंतरंग मोहभाव को सूचित करनेवाले धन-वस्त्र-मकान-स्त्री आदि परिग्रह रखते हैं और अपने को महानगुरु समझते हैं ह्न वे कुगुरु हैं; मिथ्यात्व के कारण वे स्वयं तो पत्थर की नाव की तरह संसारसमुद्र में डूबते ही हैं; साथ ही वीतरागी गुरुओं का स्वरूप न पहचानकर जो जीव ऐसे कुगुरुओं का सेवन करते हैं, वे भी संसार समुद्र में डूबते हैं। अन्य कुगुरु ने उनको नहीं डुबोया; किन्तु उन्होंने स्वयं अपने भाव में मिथ्यात्व को पुष्ट किया, इसलिये वे संसार में डूबे।

जिसप्रकार पत्थर की नौका तो नौका में ही थी; किन्तु तू उसमें क्यों बैठा? बैठनेवाले को विचार करना चाहिए था कि जिसमें मैं बैठ रहा हूँ, वह नौका लकड़ी की है या पत्थर की? तारनेवाली है या डुबानेवाली?

उसीप्रकार कुगुरुओं का मिथ्याभाव तो उनके पास ही रहा; किन्तु तुमने उसको अच्छा क्यों माना? भाई! तुझे विचार करना चाहिए कि किसके सेवन से मुझे लाभ है। जो स्वयं वीतरागी हैं और वीतरागता का ही उपदेश देनेवाले हैं ह्न उनके सेवन से ही हित होगा; किन्तु जो स्वयं रागी

हैं और राग के सेवन का उपदेश देनेवाले हैं, उनके सेवन से हित नहीं होगा; अतः अपने हित के लिये सत्य-असत्य को पहचानकर कुगुरुओं का सेवन छोड़ !

पण्डित टोडरमलजी कहते हैं कि ''अहो ! देव-गुरु-धर्म तो सर्वोत्कृष्ट पदार्थ हैं, इनके आधार से तो धर्म है, इन विषै शिथिलता राखैं तब अन्य धर्म कैसे होय? तातैं बहुत कहवो करि कहा? सर्वथा प्रकार कुदेव-कुगुरु-कुधर्म का त्यागी होना योग्य है। कुदेवादि का त्याग न करने से मिथ्यात्वभाव बहुतपुष्ट होय है। यह जानि मिथ्यात्वभाव छोड़ी अपना कल्याण करो।''

वीतरागशासन में देव-गुरु-धर्म वीतरागता के ही पोषक हैं। जो राग से धर्म मानते हों अथवा देह की क्रिया को आत्मा की मानते हों ह्न ऐसे देव-गुरु-धर्म वीतरागशासन में नहीं हैं अर्थात् वे कुदेव-कुगुरु-कुधर्म हैं। उनको मानने से तीव्र मिथ्यात्वभाव के कारण जीव का बहुत अहित होता है। वे राग से धर्म मानते हैं, वस्त्रादि परिग्रह सहित साधुपना मानते हैं और साथ में महावीर भगवान का नाम देकर बातें करते हैं; किन्तु महावीर कौन थे ? इसकी पहचान नहीं है, महावीर के मार्ग को वे जानते नहीं हैं। वीर का मार्ग तो वीतरागता का मार्ग है; जो राग से पार आत्मस्वभाव की वीरता-वीतरागता प्रगट करें, वे ही वीरमार्ग के उपासक हैं। राग से धर्म मानकर जो राग का सेवन करते हैं, वे वीतराग मार्ग के उपासक नहीं हैं।

अहा ! वीर का वीतरागमार्ग अद्भुत है; परन्तु कुगुरुओं ने उसको अन्यथा बना दिया है। राग की रुचिवाले जीव वीतराग-महावीर के सच्चे भक्त नहीं; अपितु उनके विराधक हैं। राग की रुचिवाले जीव की परिणति राग को नमती है, वीतरागी भगवान को नहीं नमती; भले ही वह 'णमो अरिहंताणं' ऐसा बोलता हो; किन्तु उस समय भी उसकी परिणति राग की ओर झुककर राग को ही नमती है; अरहंत को नहीं नमती। यदि अरहंत को नमे अर्थात् वीतरागी शुद्धस्वरूप के सन्मुख होकर उसमें नमे, तो उसकी परिणति में सम्यग्दर्शनादि वीतरागभाव प्रगट हो जाय। अकेले राग में स्थित रहकर वीतराग को नमस्कार नहीं हो सकता, राग से भिन्न होकर वीतराग को नमस्कार होता है। यही बात श्री समन्तभद्रस्वामी महावीर भगवान की स्तुति में कहते हैं कि ह्न

हे जिन सुर असुर तुम्हें पूजें। मिथ्यात्वी चित नहीं तुम पूजें।।

हे देव ! सम्यग्दृष्टि का चित्त ही आपकी वास्तविक पूजा करता है, मिथ्याबुद्धिवाले अज्ञानी का चित्त आपकी पूजा नहीं कर सकता; क्योंकि राग से भिन्न आपके स्वरूप को वह पहचानता ही नहीं है। जिसप्रकार तोता 'राम' बोलता है; परन्तु राम का स्वरूप उसे ज्ञात नहीं है; उसी प्रकार राग से लाभ माननेवाला अज्ञानी कदाचित् तोते की तरह 'महावीर' का नाम बोले; परन्तु महावीर के स्वरूप की उसे पहचान नहीं है। महावीर को मानने वाला राग से धर्म नहीं मानता और राग से धर्म मानने वाला महावीर को नहीं पहचानता। रागरहित चिदानन्दस्वभाव मैं हूँ ह्न ऐसी अंतरात्मदृष्टि जिसने की है, वही अपने परमार्थ वीतरागस्वरूप में झुका और उसने ही वीतराग महावीर को सच्चा नमस्कार किया। यह बात समयसार की ३१वीं गाथा में कुन्दकुन्द स्वामी ने अलौकिक रीति से समझाई है। अहा ! वीतरागमार्गी सन्तों की कथनी ही जगत से भिन्न है, वह अन्तर्मुख ले जाने वाली है।

जैनधर्म में गुरुपदवी अर्थात् मुनिदशा वस्त्रादि रहित ही होती है ह्न यह त्रिकाल नियम है। जो वस्त्रादि परिग्रह सहित है, वह गृहस्थ है; ऐसे गृहस्थ को आत्मा का ज्ञान हो सकता है, सम्यग्दर्शन हो सकता है, निर्विकल्प अनुभव और पंचम गुणस्थान रूप श्रावकपना भी हो सकता है; परन्तु साधुपना-मुनिपना नहीं हो सकता। जैन साधुओं को अन्तर में तीन कषाय के अभाव से इतनी वीतरागता हो गई है कि वे शरीर के प्रति निर्मोही हो गये हैं, अतएव वस्त्रादि से देह के रक्षण की वृत्ति उन्हें होती ही नहीं। मुनिपद तो परमेष्ठी पद है, उसकी वीतरागता का क्या कहना?

ऐसे वीतरागी गुरुओं को छोड़कर अज्ञानी-कुगुरुओं का सेवन करने से तीव्र मिथ्यात्व का महान पाप होता है; अतः जिन्हें पाप का भय हो, भव का भय हो, वे पापपोषक ऐसे कुगुरु की श्रद्धा छोड़ो ह्न ऐसा करुणापूर्वक श्रीगुरुओं का उपदेश है। कुगुरु की सेवा में रत श्रेणिक राजा ने सच्चे वीतरागी गुरु की विराधना करके नरक की दीर्घ आयु बाँध ली, तत्पश्चात् जब सच्चे गुरु को पहचानकर उनका सेवन किया, तब आत्मज्ञान प्राप्त करके तीर्थंकर नामकर्म भी बाँधा और नरक की दीर्घ आयु में से असंख्य वर्ष का छेद कर दिया; अतः हे जीवों ! सच्चे गुरु का स्वरूप पहचानकर कुगुरु की मान्यता को छोड़ दो, इसी से तुम्हारा हित होगा।

गृहीत मिथ्यात्व दशा में श्रेणिक राजा ने यशोधर मुनिराज पर उपसर्ग किया और नरक की आयु बाँधी। वे मुनिराज उपसर्ग दूर होने तक समताभावपूर्वक वैसे के वैसे ध्यान में बैठे रहे और बाद में उपसर्ग दूर होने पर श्रेणिक को भी धर्मवृद्धि कही। जैन मुनिराज की ऐसी क्षमा तथा वीतरागता देखकर श्रेणिक को भी जैनधर्म की श्रद्धा हुई। उसने सम्यग्दर्शन प्रगट किया और व्रत या त्याग न होने पर भी तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध किया। इसप्रकार मिथ्यात्व के त्याग से जीव का हित होता है। बाह्य परिग्रह छोड़कर भी यदि अन्तर में से मिथ्यात्व न छोड़े तो जीव का हित नहीं होता। शुभ विकल्प से जीव को धर्मलाभ मानना मिथ्यात्व है, वही बड़ा परिग्रह है और पाप का मूल है। मिथ्यादृष्टि जीव बाहर से तो त्यागी हुआ; परन्तु अन्तर में अपने निष्परिग्रही आत्मस्वभाव को अनुभव में नहीं लेने व राग की पकड़ नहीं छोड़ने से वह मोक्षमार्ग में नहीं आया।

प्रवचनसार गाथा २३६ की टीका में आचार्यदेव कहते हैं कि जिनके तत्त्वार्थश्रद्धान लक्षणवाली दृष्टि अर्थात् सम्यग्दर्शन नहीं है ह्न ऐसे जीव स्व-पर के विभाग का अभाव होने से काया और कषायों के साथ एकत्व का अध्यवसाय करते हैं। उनको विषयों की अभिलाषा का त्याग नहीं है; अतः वे षट्काय के घातक हैं और उन्हें मोक्षमार्ग के कारणरूप संयम नहीं होता। काया और कषाय (अशुभ या शुभ) से भिन्न अपने उपयोगस्वरूप आत्मा का अनुभव किये बिना मोक्षमार्ग नहीं होता और ऐसे मोक्षमार्ग के बिना गुरुपद नहीं होता।

गुरु तो अपने वीतरागस्वरूप को साधने में लीन हैं। उनके अन्तर में मोहादि परिग्रह का त्याग होने से निमित्तरूप बाह्यपरिग्रह भी छूट गये हैं। अन्तर में रागादि को और बाह्य में वस्त्रादि परिग्रह को ग्रहण करने की वृत्ति मुनियों को कभी नहीं होती। गुरु का स्वरूप इससे विपरीत मानना या वस्त्रादि परिग्रह सहित को गुरु मानकर पूजना सो कुगुरुसेवन है। गुरुपद अर्थात् मुनिदशा तो जिनलिंगी होती है। **(क्रमशः)**

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल हीरक जयन्ती वर्ष ह्न

महाराष्ट्र में डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के हिरक जयन्ती वर्ष की घोषणा से सम्पूर्ण भारत के जैन समाज में प्रसन्नता की लहर फैल रही है और अनेक स्थानों पर आपकी हीरक जयन्ती मनाई जा रही है। इसी क्रम में बुधवार, दिनांक २१ अक्टूबर २००९ को कोल्हापुर (महा.) में आपका हीरक जयन्ती समारोह अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ।

ज्ञातव्य है कि दिनांक २० व २१अक्टूबर को कोल्हापुर में डॉ.भारिल्लजी ने दो प्रवचनों में सम्पूर्ण समयसार का सार अत्यंत सरल-सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया, जिससे वहाँ के श्रोतागण भावविभोर हो गये।

कोल्हापुर (महा.) : यहाँ दिगम्बर जैन सर्वोदय स्वाध्याय समिति एवं अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा, कोल्हापुर के तत्त्वावधान में बुधवार, दिनांक 21 अक्टूबर 2009 को रात्रि में डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल के हीरक जयन्ती वर्ष के अवसर पर उनके द्वारा जिनवाणी के प्रचार प्रसार में किये गये कार्यों का सत्कार समारोह अत्यंत हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री कैलाशचन्दजी बड़जात्या (पूर्व सेक्रेटरी शुगर मर्चेंट्स एसोसिएशन) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में कोल्हापुर के प्रसिद्ध व्यापारी श्री अरविन्द जैन व श्री सुभाषजी भोजे उपस्थित थे। सभा के प्रारंभ में सर्वप्रथम सर्वोदय समिति के अध्यक्ष श्री शान्तिनाथ खोत ने कहा कि इस सम्पूर्ण क्षेत्र में जो आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान का प्रचार-प्रसार दिखाई दे रहा है, उसका मूल श्रेय डॉ. भारिल्ल साहब को ही जाता है; क्योंकि वे स्वयं तो समय -समय पर पधारते ही हैं, उनका साहित्य व प्रवचनों की कैसेट्स-सीडी भी घर-घर पहुँच चुकी है। उनके ही सुयोग्य शिष्य पण्डित जिनचन्दजी अलमानहै जिनके निमित्त से तो यहाँ महती धर्मप्रभावना हो रही है।

तत्पश्चात पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने उनके समग्र व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उनके द्वारा जैनदर्शन के अनेक महत्वपूर्ण सिद्धांतो पर विवेचन तो हुआ ही है; लेकिन उनके वक्तव्यों में अनेकों बार यह सुनने को मिलता है कि इस गंभीर विषय पर मुझे अपना स्पष्ट चिंतन प्रस्तुत करना है; अत: हम चाहते हैं कि वह सब शीघ्रातिशीघ्र हमारे सामने आवें तो जैन समाज का सौभाग्य होगा। श्री टोडरमल महाविद्यालय के वहाँ उपस्थित छात्रों के प्रतिनिधि के रूप में पण्डित अनिल अलमान, पण्डित प्रसन्न शेटे, पण्डित अभिनन्दन पाटील, पण्डित अभिजीत अलगौंडर तथा ध्रुवधाम वाँसवाड़ा के पण्डित सनत खोत ने अपने गुरुवर्य से प्राप्त तत्वज्ञान के कारण उनका उपकार स्मरण करते हुए उन्हीं की तरह आजीवन तत्वज्ञान के

श्री बालासाहेब पाटील, रमेश शहा, सुधीर पाटील, राजू दोड्डण्णावर, प्रकाश उपाध्ये, राजेन्द्र जैन एवं पण्डित शांतिकुमारजी पाटील मंचासीन थे।

अतिथियों के स्वागत एवं कु.परिणति पाटील द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण के पश्चात् जैन युवक मंडल के सक्रिय ट्रस्टी श्री राम कस्तूरी ने डॉ.साहब का संक्षिप्त परिचय देते हुये बेलगांव में उनके निमित्त से हुये कार्यों की जानकारी दी।

कन्नड़ आत्मधर्म की सम्पादिका विदुषी धवलश्री पाटील ने अपने कन्नड़ भाषा में दिये वक्तव्य में कहा कि सत्कार तो ज्ञान व चारित्र का होना चाहिये। उसमें भी ज्ञान का विशेष महत्व है, क्योंकि ज्ञान के बिना चारित्र सुगंध के बिना फूल की तरह है। डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल का सच्चा सत्कार तभी कहलाएगा जब हम उनके विलक्षण क्षयोपशम ज्ञान के निदर्शक क्रमबद्धपर्याय, निमित्तोपादान, नयचक्र, धर्म के दशलक्षण आदि विशिष्ट जैन सिद्धांतों को अपने जीवन में श्रद्धापूर्वक स्वीकार करेंगे।

बेलगांव के प्रसिद्ध व्यापारी एवं समाजसेवक श्री राजेन्द्र जैन ने कहा कि स्थानकवासी परम्परा में मैं अनेक वर्षों से स्वाध्याय कर रहा हूँ; लेकिन णमोकार मंत्र का जैसा मर्म आपसे सुनने को मिला वह अनेक साधु-संतों से भी हमें प्राप्त नहीं हुआ था। आपका सत्कार करने का अवसर हमें मिल रहा है यह हमारा सौभाग्य है। आप शतायु हों और हमें पुन: इसी प्रकार आपका शताब्दि महोत्सव मनाने का सुअवसर मिले।

रिटायर्ड सेल्स टैक्स कमिश्नर श्री बी.पी.मुत्तिन ने अंग्रेजी में अपना वक्तव्य देते हुये कहा कि आपकी 50 से भी अधिक पुस्तकें 42 लाख की संख्या में आठ भाषाओं में जन-जन तक पहुँच चुकी है यह आपके व्यक्तित्व की विशालता को प्रदर्शित करता है।

रिटायर्ड जिला न्यायाधीश श्री जिनदत्त देसाई ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि आप जैसे महापुरुष के सत्कार समारंभ की अध्यक्षता करने की योग्यता मुझमें कहाँ है ? लेकिन यह पद मुझे इसलिये मिला है कि मैं आपसे उम्र में दो वर्ष बड़ा हूँ। आप महान हैं, क्योंकि आपका कार्य महान है। कुन्दकुन्दादि आचार्यों द्वारा लिखे हुये ग्रंथों का विषय हम जैसे सामान्य ज्ञानवालों को अत्यंत कठिन लगता था; लेकिन आपने अपने लेखन व प्रभावशाली प्रवचनों से उसे इतना सरल कर दिया है कि वह अब जन-जन के समझ में आने लगा है। स्वकल्याण तो सभी कर सकते हैं; लेकिन जिस तरह से जनहित व लोकहित के कार्यों में आप समर्पित हैं, ऐसा व्यक्तित्व दुर्लभ है। आप चिरायु हों एवं इसी तरह स्व-पर कल्याण करें ऐसी हम सबकी हार्दिक शुभेच्छा है।

सन्मान्य डॉ.भारिल्लजी को श्री राजेन्द्र जैन ने तिलक, श्री बालासाहेब पाटील ने मैसूरी पगड़ी, श्री गोपाल जिनगोडा ने माल्यार्पण, श्री सुधीर पाटील ने शॉल, श्री सुहास मोहिरे ने फलों का स्तबक एवं जिनदत्त देसाई ने मानपत्र प्रदान कर सत्कार किया। मानपत्र का वाचन गृहमंत्रालय में राजभाषा विभाग के केन्द्र प्रभारी प्राध्यापक डॉ.जयशंकर यादव बनारसवालों ने किया। उन्होंने ही यह मानपत्र बनाया था। कार्यक्रम का सफल संचालन भी इन्होंने ही किया।

श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल का भी कुमकुम तिलक सौ.जिनदत्त देसाई, माल्यार्पण सौ.सुनन्दा रमेश चिवटे एवं श्रीफल व साड़ी सौ.मंगला रमेश शहा ने प्रदान कर सम्मान किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री महावीर पत्रावले व रमेश चिवटे का विशेष योगदान रहा।●

नियमसार प्रवचन

निज आत्मा ही उपादेय है

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 38 वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है ह्न

जीवादिबहित्तच्चं हेयमुवादेयमप्पणो अप्पा।
कम्मोपाधिसमुब्भवगुणपज्जाएहिं वदिरित्तो ।।३८।।

(हरिगीत)

जीवादि जो बहितत्त्व हैं, वे हेय हैं कर्मोपधिज।
पर्याय से निरपेक्ष आतमराम ही आदेय है।।३८।।

जीवादि बाह्यतत्त्व हेय हैं; कर्मोपाधिजनित गुणपर्यायों से निरपेक्ष आत्मा ही आत्मा को उपादेय हैं।

यह हेय और उपादेय तत्त्व के स्वरूप का कथन है। छोड़ने योग्य क्या है और ग्रहण करने योग्य क्या है ? यह इस गाथा में बताया जाता है।

जीवादि सात तत्त्वों का रागसहित विचार परद्रव्य है, क्योंकि राग से सम्यग्दर्शन नहीं होता है, अतः सातों तत्त्व उपादेय नहीं है।

जीवादि साततत्त्वों का समूह परद्रव्य होने के कारण वास्तव में उपादेय नहीं है :- आत्मा अनन्त गुणों के पिण्डस्वरूप वस्तु है, वह जीव है; कर्म अजीव है; पर्याय में राग-द्वेषादि के परिणाम होना आस्रव है; जीव का उस परिणाम में अटकना बन्ध है; आत्मा के लक्ष से निर्मलता होना संवर है; विशेष निर्मलता होना निर्जरा है; और परिपूर्ण निर्मलता वह मोक्ष है ह्न इन सात तत्त्वों को यहाँ परद्रव्य कहा है।

जीव : ''मैं ज्ञान, दर्शन, चारित्रादि अनन्त गुणों का पिण्ड शुद्धजीव हूँ ह्न कर्म, शरीरादि सब अजीव हैं, मैं उस रूप नहीं हूँ। संसारदशा में रागद्वेषादि के

परिणाम होते हैं, किन्तु वह मैं नहीं हूँ; मैं तो ज्ञानस्वरूप हूँ। संवर, निर्जरा और मोक्ष भी पर्याय है, इतना ही मैं नहीं हूँ; मैं तो अनादि-अनन्त, एकरूप, शुद्धकारणपरमात्मा हूँ। मेरे शुद्धकारणपरमात्मा के आधार से संवर, निर्जरा तथा केवलज्ञानादि की कार्यशुद्धदशा प्रकट होती है; ऐसा मैं शुद्धचैतन्यस्वरूप हूँ, कारणपरमात्मा हूँ।'' इसप्रकार मन के सम्बन्ध से रागसहित अपने जीव का विचार करना ह्न उस रागसहित जीवतत्त्व को हेय कहा है। चैतन्यस्वभाव का आश्रय न लेकर रागमिश्रित विचार से राग में रुकता है, अतः उस जीवतत्त्व को आदरणीय नहीं कहा।

सातों तत्त्व भिन्न-भिन्न हैं ह्न ऐसा ज्ञान करने के लिए प्रथम राग की वृत्ति उठती है। किन्तु सम्यग्दर्शन का विषय अथवा ध्येय राग नहीं है, राग से पुण्य बन्ध होता है, उससे सम्यग्दर्शन नहीं होता; इसलिये उस राग को हेय कहा है।

कारणशुद्धपरमात्मा जो मोक्ष का आधार है, स्वभावभाव है, उसके रागमिश्रित विचार को भी हेय कहा है, आदरणीय नहीं कहा; तो फिर दया, दान, व्रतादि के परिणाम तो हेय ही हैं, आदरणीय नहीं ह्न यह बात इसमें आ जाती है।

अन्यमत वाले जीव का स्वरूप अन्यथा कहते हैं। सब मिलकर एक जीव कहते हैं। ऐसे जीव की तो बात ही नहीं है। यहाँ तो तीर्थंकर कथित जीव का स्वरूप यथार्थ माने उसकी बात करते हैं। दया-दानादि के परिणाम पुण्य हैं, हिंसादि के परिणाम पाप हैं ह्न दोनों ही आस्रव हैं, उनमें अटकना बन्ध है।

उनसे रहित त्रिकालीशुद्ध चैतन्यस्वभाव एकरूप परमपारिणामिक स्वभावभाव -उसका द्रव्य शुद्ध, गुण शुद्ध और उसकी वर्तमानपर्याय-कारणपर्याय भी शुद्ध, ऐसे परमपारिणामिक स्वभावभाव से वर्तते हुए शुद्ध जीवतत्त्व को जो मानता है ह्न उसकी बात है। अजीवादि षट्तत्त्वों से भिन्न है, मोक्षपर्याय किसी निमित्त के कारण, पुण्य के कारण प्रकट नहीं होती; किन्तु त्रिकालशुद्ध परमपारिणामिक के आधार से प्रकट होती है ह्न ऐसा शुद्ध जीवतत्त्व है।

वह जीवतत्त्व असंख्यप्रदेशी है। उसमें ज्ञान, दर्शन, चारित्रादि अनन्त गुण हैं और प्रत्येक गुण में प्रतिसमय पर्याय होती है। ऐसी अनन्त पर्यायों सहित सम्पूर्ण

आत्मा है। जिसमें से मोक्षरूपी कार्य प्रकट होता है, वह कारणशुद्धपरमात्मा है और वही शुद्ध जीवतत्त्व है। ऐसे शुद्ध जीवतत्त्व के रागमिश्रित विचार में अटकना भी पुण्यबन्ध का कारण है; धर्म का कारण नहीं। राग परद्रव्य है और उसमें कर्म का निमित्तरूप सम्बन्ध आता है; अतः रागयुक्त जीव को परद्रव्य कहकर हेय कहा है। दूसरे जीव की बात नहीं है। अपने जीव की रागसहित विचारणा करना भी उपादेय नहीं है; कारण कि राग के लक्ष से सम्यग्दर्शन नहीं होता और ऐसी स्थिति में दया, दानादि के शुभभाव से अथवा शरीर की क्रिया से धर्म होता है ह्न यह बात तो बहुत दूर रह गई। सम्यग्दर्शन का विषय रागरहित शुद्धजीव है और उसी का अवलम्बन करने योग्य है, चाहे जैसा शुभराग हो; परन्तु है वह हेय ही।

केवली भगवान तथा गुरु इत्यादि परजीव हैं, उनसे सम्बन्धित विचार की बात नहीं है, कारण कि वे जीव इस राग से अत्यन्त भिन्न हैं। केवली और गुरु से जुदा मैं जीव हूँ, ऐसे स्व-जीव का विकल्प भी हेय हैं। इस अपेक्षा से जीवतत्त्व को यहाँ हेय कहा गया है।

अजीव : शरीर, कर्म, शास्त्र इत्यादि अजीव हैं ह्न जड़ हैं। वे द्रव्य अजीव हैं और उनके गुण तथा पर्यायें भी अजीव हैं। अजीव की पर्याय जीव करता है और जीव की पर्याय अजीव करता है ह्न ऐसी मान्यता जिसकी है, उसके तो अभी व्यवहारश्रद्धा का भी ठिकाना नहीं है। कर्म, शरीर, वाणी, शास्त्र, रोटी, दाल, भात इत्यादि सभी अजीव पदार्थों की पर्याय अजीव के कारण होती है; जीव की इच्छा के कारण नहीं होती। आत्मा है ह्न तो भाषा बोली जाती है अथवा शरीर चलता है ह्न ऐसा जो मानता है उसके तो अजीवतत्त्व की व्यवहारश्रद्धा भी सच्ची नहीं है।

उसे रागसहित साततत्त्व हेय हैं और अकेला जीव ही उपादेय है ह्न ऐसी श्रद्धा कहाँ से होगी? यहाँ तो अजीव से जीव को लाभ नहीं माने, वाणी से ज्ञान होता है - ऐसा भी नहीं माने, अजीव के द्रव्य-गुण-पर्याय स्वतंत्र हैं; इसप्रकार जो अजीव को रागसहित स्वीकारता है अर्थात् रागपूर्वक विचार-विकल्प करता है, वह भी हेय है; उपादेय नहीं। कारण कि 'अजीव ऐसा है' ह्न इसप्रकार विचार करने पर उस अजीव के लक्ष से राग की उत्पत्ति होती है, सम्यग्दर्शन नहीं होता; अतः रागसहित अजीवद्रव्य का विचार करना उपादेय नहीं। (क्रमशः)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : एक पर्याय दूसरी पर्याय को स्पर्श नहीं करती तो पूर्व संस्कार दूसरी पर्याय में कैसे काम करते हैं ?

उत्तर : एक पर्याय दूसरी पर्याय को स्पर्श नहीं करती, यह बात तो ठीक ही है, परन्तु वर्तमान पर्याय में ऐसा प्रबल संस्कार डाला होगा तो उसका जोर दूसरी पर्याय में प्रकट हो- ऐसी ही उस उत्पाद-पर्याय की स्वतन्त्र योग्यता होती है, उत्पाद-पर्याय के सामर्थ्य से स्मरण में आता है।

प्रश्न : श्रवण करके संस्कार दृढ करना- आगे बढने का कारण है क्या?

उत्तर : हाँ, अन्दर में संस्कार दृढ डाले तो आगे बढता है।

प्रश्न : श्रवण में प्रेम हो तो मिथ्यात्व भी मन्द पड़ता होगा?

उत्तर : मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी तो अनन्तबार मन्द पड़ चुका है, फिर भी वह सम्यग्दर्शन का कारण नहीं बना। मूल दर्शनशुद्धि पर जोर होना चाहिए।

प्रश्न : नवतत्त्व का विचार तो पहले अनन्तबार कर चुके हैं, फिर भी लाभ क्यों नही हुआ ?

उत्तर : भाई ! पहले जो नवतत्त्व का विचार कर चुके हो,उससे इसमें कुछ विशेषता है। पहले जो नवतत्त्व का विचार कर चुके हो, वह तो अभेदस्वरूप के लक्ष्य बिना किया था, जबकि यहाँ अभेदस्वरूप के लक्ष्य सहित आत्मानुभूति की बात है।

पहले अकेले मन के स्थूल विषय से नवतत्त्व के विचाररूप आँगन तक तो अनन्तबार आया है; परन्तु उससे आगे बढकर विकल्प तोड़कर ध्रुव चैतन्यतत्त्व में एकपने की श्रद्धा करने की अपूर्व समझ से वंचित रहा; इसलिए भवभ्रमण खड़ा रहा।

प्रश्न : प्रवचन तो वर्षों से सुनते आ रहे हैं, अब तो अन्दर जाने का कोई संक्षिप्त मार्ग बताइये ? जीवन अल्प रह गया है ?

उत्तर : आत्मा अकेला ज्ञानस्वभाव चिद्घन है, अभेद है, उसकी दृष्टि करो। भेद के ऊपर लक्ष्य करने में रागी जीव को राग उत्पन्न होता है, इसलिए भेद का लक्ष्य छोड़कर अभेद की दृष्टि करो- यही संक्षिप्त सार है।

प्रश्न : तिर्यंच को ज्ञान अल्प होने पर भी आत्मा पकड़ में आ जाता है और हम इतनी मेहनत करते हैं तो भी आत्मा पकड़ में क्यों नहीं आता?

उत्तर : ज्ञान में आत्मा का जितना वजन आना चाहिए, वह नहीं आता; स्वरूपप्राप्ति का जितना जोर आना चाहिए, वह नहीं आता; जितना जिसप्रकार का राग छूटना चाहिए, वह नहीं छूटता; इसलिए कार्य नहीं होता अर्थात् आत्मा पकड़ में नहीं आता।

प्रश्न : शुद्धनय का पक्ष हुआ है, इसका क्या अर्थ है?

उत्तर : शुद्धनय का पक्ष होने का आशय है -शुद्धात्मा की रुचि होना। अनुभव अभी हुआ नहीं है; किन्तु रुचि ऐसी हुई है कि अनुभव होगा ही; परन्तु यह होने पर भी कहीं सन्तोष कर लेने की बात नहीं है। इस जीव के सम्बन्ध में केवली ऐसा जानते हैं कि इस जीव की रुचि इतनी प्रबल है कि अनुभव करेगा ही। इस जीव को ऐसा ज्ञायक का जोर वीर्य में वर्त्तता है- यह केवली जानते हैं।

प्रश्न : दीर्घकाल से तत्त्वाभ्यास करने पर भी आत्मा प्राप्त क्यों नहीं हुआ ?

उत्तर : आत्मा अतीन्द्रिय आनन्द का नाथ है, उस अतीन्द्रिय आनन्द की लगन उत्पन्न हो, आत्मातिरिक्त अन्यत्र मिठास लगे नहीं, रस पड़े नहीं, जगत के पदार्थों का रस फीका लगने लगे अर्थात् संसार के राग का रस उड़ जाय।

अहो ! जिसका विशद् बखान हो रहा है, वह आत्मा अनन्तानन्त गुणों का पुंज प्रभु है कौन?- ऐसा आश्चर्य उत्पन्न हो, उसकी लगन लगे, धुन चढे- तब समझना चाहिए कि आत्मा प्राप्त होगा ही; कारण उपस्थित हुए बिना कार्य होता नहीं और कारण की अपूर्णता में भी कार्य सम्पन्न करने की क्षमता नहीं। आत्मा के आनन्दस्वरूप की अन्दर से सच्ची लगन लगे, बैचेनी हो, स्वप्न में भी उसका अभाव न हो, तब समझना चाहिये कि अब आत्मानुभूति अवश्य होगी।

प्रश्न : आत्मा का स्वरूप ज्ञान में आने पर भी वीर्य बाह्य में क्यों अटक जाता है ?

उत्तर : जैसा विश्वास आना चाहिए, वैसा नहीं आता है; इसलिए अटक जाता है। जानपना तो ग्यारह अंग का भी हो जाय, परन्तु यथोचित भरोसा नहीं आता। भरोसे से भगवान हो जाय, परन्तु यथोचित भरोसा नहीं आता। भरोसे से भगवान हो जाय, परन्तु वह नहीं आता, इसलिए भटकता है। ●

समाचार दर्शन

एक साथ 25 स्थानों पर विशाल धार्मिक ग्रुप शिविर

भगवान महावीरस्वामी के निर्वाणोत्सव के अवसर पर दिनांक 19 से 25 अक्टूबर तक मध्यप्रदेश के दमोह, सागर एवं छतरपुर जिलों के छोटे-बड़े 25 स्थानों पर जैनत्व जागरण संस्कार शिविर लगाये गये। शिविरों का आयोजन कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन एवं मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा के आयोजकत्व में जैन युवा शास्त्री परिषद् बकस्वाहा द्वारा किया गया।

इस शिविर का मूल उद्देश्य नवयुवा पीढी में जैनत्व के संस्कारों का बीजारोपण एवं जैनत्व का गौरव जागृत करना रहा है।

इस शिविर का भव्य सामूहिक उद्घाटन समारोह बकस्वाहा मुमुक्षु मण्डल द्वारा बकस्वाहा में किया गया, जिसमें पण्डित कोमलचन्दजी टड़ा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित माधवजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित प्रमोदजी शाहगढ, पण्डित मनीषजी सिद्धांत खड़ैरी, पण्डित भानुजी खड़ैरी, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री बाँसवाड़ा, पण्डित सुनीलजी शाहगढ एवं पण्डित नितिनजी खड़ैरी आदि विद्वान मंचासीन थे।

इस जैनत्व जागरण अभियान को सफल बनाने में पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री जयपुर, पण्डित कमलेशजी बण्डा, पण्डित संभवजी नैनधरा, पण्डित अंकुरजी दहेगांव, पण्डित अभिषेकजी मड़देवरा, पण्डित आशीषजी भगवां, पण्डित विवेकजी मड़देवरा, पण्डित एकत्वजी खनियांधाना, पण्डित आशीषजी मड़ावरा, पण्डित विकासजी इन्दौर, पण्डित सौरभजी अमरमऊ, पण्डित विक्रांतजी भगवां, पण्डित अनेकांतजी दलपतपुर, पण्डित सुदीपजी अमरमऊ, पण्डित रविन्द्रजी बकस्वाहा, पण्डित विश्वासजी बड़ामलहरा, पण्डित पंकजजी बकस्वाहा, पण्डित अशोकजी बकस्वाहा, पण्डित सनतजी बकस्वाहा, पण्डित अंकितजी खड़ैरी एवं पण्डित अभयजी बकस्वाहा आदि टोडरमल महाविद्यालय के विद्वानों का सहयोग रहा।

इस शिविर का निरीक्षण पण्डित प्रवीणजी शास्त्री जयपुर ने किया।

संपूर्ण शिविर में लगभग 1900 शिविरार्थियों ने लाभ लिया, जिनमें 1200 बच्चे शामिल हैं।

इस शिविर की विशेष उपलब्धि यह रही कि इसमें 200 से अधिक जैनेतर बच्चों एवं बड़ों ने भाग लिया। गांव-गांव में अनेक नवीन पाठशालायें प्रारंभ की गयीं।

शिविर का सामूहिक समापन समारोह सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरी-सिद्धायतन में हुआ, जहाँ सभी विद्वानों, प्रभारियों के साथ नियमित पाठशाला पढाने के लिये संकल्प लेने वाले अध्यापकों का भी सम्मान किया गया।

स्थानीय रूप से बकस्वाहा में पण्डित गुलाबचन्दजी बीना द्वारा समयसार, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री जयपुर द्वारा पंचलब्धि एवं पंचपरावर्तन की कक्षायें तथा पण्डित अंकुरजी शास्त्री दहेगांव द्वारा **हम उपयोग का प्रयोग कैसे करें** इस विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला, साथ ही पण्डित एकत्वजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा पूजन, भक्ति एवं तीनों समय बालकक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर का सफल संचालन पण्डित चैतन्यजी शास्त्री बकस्वाहा, पण्डित संतोषजी शास्त्री बकस्वाहा, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मड़देवरा एवं वीरेन्द्रजी शास्त्री बकस्वाहा के संयोजकत्व में संपन्न हुआ।

- मुमुक्षु मण्डल (बकस्वाहा)

गुरुदेवश्री का स्मृति दिवस मनाया

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 9 नवम्बर को गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का स्मृति दिवस बहुत उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन एवं श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई मंचासीन थे।

अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. भारिल्ल ने गुरुदेवश्री के जीवन-दर्शन संबंधी अनेक पहलुओं को छूते हुये उनके द्वारा किये गये तत्त्वप्रचार-प्रसार को लगभग एक घण्टे तक बताया। साथ ही अन्य अतिथियों ने भी अपने विचार व्यक्त किये। संचालन पण्डित प्रवीणजी शास्त्री ने किया।

शोक समाचार...

1. बुन्देलखंड धरा को लघु सोनगढ बनानेवाले **पण्डित गोविन्ददासजी खड़ैरी** (वर्तमान प्रवासी सोनगढ) का दिनांक 5 नवम्बर को प्रात:काल सोनगढ में निधन हो गया। आपने गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के तत्त्व को संपूर्ण बुन्देलखण्ड में प्रचारित किया था। मुमुक्षु समाज, खड़ैरी ग्राम को **गोविन्ददासजी की खड़ैरी** के नाम से जानती है। आपकी ही सद्प्रेरणा से खड़ैरी में 17 शास्त्री विद्वान हो गये हैं। आपने अपने मरणसमय को जानकर एक दिन पहले ही अन्न-जल का त्यागकर समाधि-मरणपूर्वक देहत्याग किया। आपके अमूल्य योगदान का मुमुक्षु समाज चिरऋणी रहेगा। **-चैतन्य शास्त्री**

2. **बिजौलिया निवासी श्रीमती सज्जनबाई ध.प. स्व.चांदमलजी लुहाडिया** का 84 वर्ष की आयु में दि.16 नवम्बर को शांत परिणामों से देहावसान हो गया। आप बहुत सरल स्वभावी एवं स्वाध्यायी महिला थीं। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक एवं मंगलायतन के निर्देशक पण्डित अशोकजी लुहाडिया की मातुश्री थीं। आपकी स्मृति में 500/-रुपये प्राप्त हुये हैं।

2. **हिंगोली (महा.) निवासी श्री जयकुमारजी बापूजी परतवार** का 84 वर्ष की आयु में अनंत चतुर्दशी के दिन दोपहर में समाधिपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायप्रेमी एवं समाजसेवी थे। ज्ञातव्य है कि आप मा. कमलचंदजी परतवार (न्यायाधीश-डेब्ट रिकवरी ट्रिब्यूनल, मुम्बई) एवं श्री संतोष परतवार (अध्यक्ष-युवा फैडरेशन हिंगोली) के पिताजी थे।

3. **कन्नड (औरंगाबाद) निवासी श्री सचिन पाटनी शास्त्री** का दिनांक 9 अक्टूबर,09 को ब्रेन ट्यूमर के कारण आकस्मिक निधन हो गया। आप श्री टोडरमल महाविद्यालय के और श्री पार्श्वनाथ ब्र.आश्रम गुरुकुल एलोरा (औरंगाबाद) के विद्यार्थी थे। आप अत्यंत सरल परिणामी थे। अल्पायु में आपके निधन से महाविद्यालय परिवार में शोक की लहर दौड़ गयी है।

4. **तलोद (गुजरात) निवासी श्री सोमचन्द भाईचन्द शाह** का 88 वर्ष की आयु में दिनांक 17 सितम्बर को देहावसान हो गया। उनकी स्मृति में लीलाबेन नगीनदास शाह द्वारा 250/- एवं श्री संजयभाई मनीषभाई शाह द्वारा 250/- रुपये साहित्य प्रकाशन हेतु प्राप्त हुये; एतदर्थ धन्यवाद !

5. **ललितपुर निवासी श्री भागचंदजी चौधरी** का दिनांक 9 नवम्बर को 92 वर्ष की आयु में समताभावपूर्वक निधन हो गया। ये गुरुदेव के अनन्य भक्त, ललितपुर मुमुक्षु समाज के स्तम्भ एवं बहुत पुराने मुमुक्षुओं में से थे। आपकी स्मृति में 1000/- प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही भावना है।

मुक्त विद्यापीठ के विद्यार्थी ध्यान दें !

श्री टोडरमल मुक्त विद्यापीठ की सत्र 2009-10 के लिये प्रवेश प्रक्रिया पूर्ण हो चुकी है। जिन छात्रों ने विशारद प्रथम वर्ष, द्वितीय वर्ष एवं सिद्धांत विशारद प्रथम वर्ष में प्रवेश लिया है, उन सभी को प्रवेश संबंधी सूचनायें भेजी जा चुकी हैं।

चूँकि विद्यापीठ में इस वर्ष से सेमेस्टर सिस्टम से परीक्षायें होंगी; अत: विद्यार्थी उसी के अनुरूप तैयारी करें। प्रथम सेमेस्टर की परीक्षा दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में आयोजित होगी। विद्यार्थियों की सुविधा हेतु प्रथम सेमेस्टर के कोर्स की पुन: सूचना दी जा रही है।

विशारद प्रथम वर्ष (उपाध्याय कनिष्ठ)

प्रथम सेमेस्टर वीतराग विज्ञान भाग-1, छहढाला + सत्य की खोज

विशारद द्वितीय वर्ष (उपाध्याय वरिष्ठ)

प्रथम सेमेस्टर तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1, लघु जैन सिद्धांत प्रवेशिका

सिद्धांत विशारद प्रथम वर्ष (शास्त्री प्रथम वर्ष)

प्रथम सेमेस्टर **गुणस्थान विवेचन** + क्रमबद्धपर्याय + सामान्य श्रावकाचार

जो छात्र किसी कारण से विगत सत्रों में परीक्षा नहीं दे पाये हैं, वे इस वर्ष की परीक्षा में शामिल हो सकते हैं। इसके लिये कोई फीस नहीं देनी होगी। ऐसे छात्र अपनी जानकारी अवश्य भेजें, ताकि उसी के अनुसार पेपर भेजे जा सकें।

आध्यात्मिक सुसंस्कार शिविर

कोल्हापुर (महा.) : यहाँ दि.जैन सर्वोदय स्वाध्याय समिति एवं अ.भा.जैन युवा फैडरेशन शाखा-कोल्हापुर के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 19 से 26 अक्टूबर 2009 तक श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक सुसंस्कार शिविर अनेक सफलताओं के साथ संपन्न हुआ।

शिविर का प्रारंभ कोल्हापुर के प्रसिद्ध व्यापारी श्री सुभाष भोजे द्वारा झण्डारोहण एवं श्री अरविन्द जैन द्वारा उद्घाटन के साथ हुआ। इस शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ.हुकमचन्द भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित जिनचन्दजी आलमान, पण्डित शीतल हेरवाड़े, डॉ.नेमिनाथ बालीकाई, विदुषी स्वयंप्रभा पाटील, कु.परिणति पाटील, कु.प्रतीति पाटील, पण्डित सुरेन्द्र पाटील, राजू सांगावे, भरत अलगोंडर, अनिल आलमान, अभिनंदन पाटील, दीपक अथणे, प्रसन्न शेटे, सनत खोत, संयम शेटे आदि अनेक विद्वानों के विभिन्न विषयों पर हुये प्रवचनों, व्याख्यानों एवं कक्षाओं का लाभ लगभग 500 श्रावक- श्राविकाओं को मिला।

शिविर की सफलता हेतु श्री कैलाशचंदजी जैन, गंगई सर, बालासाहेब वसवाडे आदि महानुभावों का विशेष योगदान रहा।

ज्ञातव्य है कि यहाँ शिविर के मध्य सकल जैन समाज ने डॉ. भारिल्ल का विशेष अभिनन्दन किया, जिसके समाचार विगत अंग में प्रकाशित हो चुके हैं। **- शांतिनाथ खोत**

अष्टान्हिका महापर्व सानन्द सम्पन्न

1. **दिल्ली :** यहाँ श्री दि.जैन चैत्यालय विश्वासनगर में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर सोमवार दिनांक 26 अक्टूबर से 2 नवम्बर तक श्री पंचमेरू नंदीश्वर महामण्डल विधान कराया गया। इस पावन प्रसंग पर आध्यात्मिक प्रवचनकार श्री प्रद्युम्नजी मुजफ्फरनगर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर एवं अनेक स्थानीय विद्वानों द्वारा आध्यात्मिक ज्ञान की गंगा बहाई गई। विधान की संपूर्ण कार्यवाही पण्डित प्रियंकजी शास्त्री एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली द्वारा सम्पन्न करायी गयी। दिनांक 2 नवम्बर को प्रात: 8 बजे एक भव्य रथयात्रा का भी आयोजन किया गया।

2. **अजमेर (राज.) :** यहाँ श्री दि.जैन सीमंधर जिनालय में श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में अष्टाह्निका महापर्व अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित धूम-धाम से मनाया गया। इस अवसर पर आध्यात्मिक विद्वान पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया द्वारा प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार की छठवीं गाथा पर प्रवचन तथा रात्रि में प्रवचनसार ग्रन्थ के आधार से मुनिराज का स्वरूप स्पष्ट किया गया। साथ ही पण्डित अश्विनजी जैनदर्शनाचार्य बांसवाड़ा द्वारा प्रतिदिन प्रात: मंडल विधान का आयोजन किया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों में गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें देव-शास्त्र-गुरु का स्वरूप, निमित्त-उपादान, बारह भावना, क्रमबद्धपर्याय, षट्लेश्या, सुख क्या है ? आदि विषयों की चर्चा की गई। दोपहर में समयसार पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन का लाभ मिला।

कार्यक्रम श्री पूनमचन्दजी लुहाडिया के मार्गदर्शन में श्री मनोजजी कासलीवाल, श्री प्रकाशजी पाण्ड्या आदि ने सम्पन्न कराये।

3. **जयपुर (राज.) :** यहाँ श्री दि. जैन मंदिर मुशरफान जौहरी बाजार में महापर्व के अवसर पर श्री माणकचन्दजी मुशरफ परिवार की ओर से श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा सम्पन्न कराये गये। कार्यक्रम में श्री विजयकुमारजी सौगाणी, श्रीमती शीलाजी सौगाणी, श्रीमती सोहनी देवी एवं श्री कमलचन्दजी मुशरफ का विशेष सहयोग मिला।

सायंकाल श्रीमती प्रभाजी जैन द्वारा विधान की जयमाला पर सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला। दिनांक 3 नवम्बर को शांतिविधान का आयोजन किया गया।

अब 9000 प्रवचन मात्र 16 डी.वी.डी. में

श्री शांतिलाल रतिलाल शाह परिवार मुम्बई के सहयोग से श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई अब आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अद्यावधि उपलब्ध 9000 प्रवचन मात्र 16 डी.वी.डी. में तैयार करा रहा है। प्रत्येक डी.वी.डी. में लगभग 550 प्रवचन होंगे।

आगे चलकर ऐसी डी.वी.डी. भी तैयार की जा रही है, जिसमें एक डी.वी.डी. में 3000 प्रवचन होंगे। विशेष जानकारी यथा समय दे दी जायेगी।

ब्र. यशपालजी द्वारा धर्म प्रभावना

1. **छिंदवाड़ा (म.प्र.) :** यहाँ मुमुक्षु मण्डल में ब्र.यशपालजी जैन द्वारा दिनांक 12 से 20 अक्टूबर तक प्रात: कर्म के दस करण पर एवं रात्रि में पुरुषार्थसिद्धयुपाय पर प्रवचन हुये। लोगों को यह विषय सुना हुआ होने पर भी विस्तार से सुनने के कारण प्रिय लगा; गुणस्थान के संबंध में सुनने की जिज्ञासा भी व्यक्त की है। समय की अनुकूलता को देखकर ब्र.यशपालजी जिज्ञासा अवश्य शांत करेंगे। **– अशोक जैन**

2. **भोपाल-कोहेफिजा (म.प्र.) :** यहाँ ब्र.यशपालजी जैन द्वारा दिनांक 21 अक्टूबर से 2 नवम्बर तक प्रात: कर्म के दस करण पर प्रवचन तथा रात्रि में गुणस्थान की कक्षा ली गई। यहाँ के समाज को करण दशक एवं गुणस्थान का ज्ञान नहीं होने से विशेष जिज्ञासा व उत्साह था। विशेष बात यह थी कि अष्टान्हिका पर्व होने पर भी लोगों की संख्या अधिक थी। यहाँ प्रथम से चौथे गुणस्थान तक का विषय चला। **– जयकुमारजी बज**

डॉ. भारिल्ल हीरक जयन्ती के अवसर पर ह्न

धर्म क्षेत्र में नोबल पुरस्कार योग्य पुरुष

कोटा से श्री भानुकुमारजी जैन, डबल एम.ए.(जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म दर्शन)

डॉ. भारिल्ल की प्रशंसा करते हुये लिखते हैं कि प्राणीमात्र को अनन्त सुखी होने का रास्ता बताने वाले इस वर्तमान समय में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के बाद कोई पुरुष है तो वह सिर्फ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल साहब हैं।

शान्ति, चिकित्सा आदि क्षेत्रों में विश्व में विशिष्ट कार्य करने वालों को नोबल पुरस्कार दिया जाता है; लेकिन धर्म के क्षेत्र में भी अगर नोबल पुरस्कार प्रदान किया जावे तो विश्व में एकमात्र व्यक्ति डॉ. भारिल्लजी हैं। उनके लिये तो यह पुरस्कार भी कोई मायने नहीं रखता।

डॉ. साहब के अलावा विश्व में कोई महापुरुष नहीं जो भव के बन्धन से छूटने का सम्यकमार्ग आगम के आधार से बता सके।

नवीन प्रकाशन

1. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखित नियमसार अनुशीलन भाग-1 (पृष्ठ-340, मूल्य-25 रुपये) छपकर तैयार है। इस पुस्तक में नियमसार ग्रन्थ की गाथा 1 से 76 तक का अनुशीलन किया गया है। पुस्तक पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्राप्त की जा सकती है।

2. पण्डित टोडरमलजी द्वारा लिखित एवं डॉ. उज्ज्वला शहा द्वारा हिन्दी में अनुवादित **सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका कर्मकाण्ड अर्थसंदृष्टि** सहित (दो भाग, कुल पृष्ठ-1050, मूल्य पोस्टेज सहित 175/- रु.) छपकर तैयार है। ग्रंथ प्राप्ति हेतु निम्न पते पर संपर्क करें-

पण्डित दिनेशभाई शहा, 157/9 निर्मला निवास, सायन (पूर्व), मुम्बई-400022, फोन नं.- 24073581

बाल संस्कार शिविर सम्पन्न

राजकोट (गुज.) : यहाँ दिनांक 20 से 25 अक्टूबर को पण्डित सुनीलजी शास्त्री, राजकोट के निर्देशन में बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। विद्वानों में पण्डित निपुणजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर एवं पण्डित अभिषेकजी शास्त्री गजपंथा का लाभ मिला; बालकों ने अपूर्व धर्मलाभ लिया।

शिविर सम्पन्न

1. होशंगाबाद : यहाँ दिनांक 9 अक्टूबर से 18 अक्टूबर तक पण्डित दिनेशभाई शहा एवं डॉ. उज्ज्वला शहा द्वारा प्रतिदिन 6 घंटे **सिद्धांत प्रवेशिका** तथा **करणानुयोग** पर प्रवचन हुये। दीपावली का अवसर होने पर भी बड़ी संख्या में समाज उपस्थित रहती थी; अनेक नये लोग भी स्वाध्याय में जुड़े। समाज की ओर से आप दोनों को पुन: आमंत्रित किया गया, जिसे आपने सहर्ष स्वीकार किया। इनकी प्रेरणा से यहाँ बालकों के लिये पाठशाला प्रारंभ की गई। प्रत्येक रविवार को चलने वाली इस पाठशाला में अनेक महिलाओं ने उपस्थित रहने का संकल्प किया है।

2. फलटण : यहाँ दिनांक 21 से 27 अक्टूबर तक पण्डित दिनेशभाई शहा तथा डॉ. उज्ज्वला शहा द्वारा प्रतिदिन 6 घंटे **सिद्धांत प्रवेशिका** तथा **जैनभूगोल** पर प्रवचनों का लाभ मिला। बच्चों से लेकर बड़ों तक सभी ने 6 घंटे रुचिपूर्वक स्वाध्याय किया। अत्यधिक लाभ मिलने के कारण समाज ने उन्हें पुन: 25 दिसम्बर से 1 जनवरी तक आमंत्रित किया है। **– सुकुमार चकेश्वरा**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

22 से 28 दिसम्बर	दक्षिण भारत	फैडरेशन यात्रा
29 व 30 दिसम्बर	बैंगलोर	प्रवचन
31 से 4 जनवरी, 2010	चैन्नई	व्याख्यानमाला
9 से 10 जनवरी, 2010	अहमदाबाद (चैतन्यधाम)	महासमिति सम्मेलन
16 से 17 जनवरी, 2010	इन्दौर	विधान
8 से 11 मार्च, 2010	निसई (म.प्र.)	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
12 मार्च, 2010	सागर	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
28 मार्च, 2010	उदयपुर	महावीर जयन्ती/हीरक जयन्ती
11 मई से 3 जून, 2010	देवलाली	गुरुदेव जयंती, प्रशिक्षण शिविर एवं हीरक जयन्ती समापन समारोह
4 जून से 25 जुलाई, 2010	विदेश	धर्म प्रचारार्थ
1 से 10 अगस्त, 2010	जयपुर	महाविद्यालय शिक्षण शिविर